तीसरी कसम के शिल्पकार शैलेंद्र (प्रहलाद अग्रवाल)

पाठ का परिचय

भारत में प्रतिवर्ष अनेक फ़िल्मों का निर्माण होता है। इनमें कुछ तो दर्शकों को बहुत दिनों तक याद रहती हैं, कुछ को वे शीघ्र ही भूल जाते हैं। फ़िल्म की यह सफलता और असफलता फ़िल्म निर्माता के व्यक्तित्व और उसकी मानसिकता पर निर्भर करती है। जब कोई फ़िल्मकार किसी साहित्यिक रचना को पूरी लगन और सच्चाई से फ़िल्म का रूप देता है तो वह फ़िल्म हमेशा के लिए अमर हो जाती है और लोगों का मनोरंजन करने के साथ-साथ उन्हें अच्छा संदेश देने में भी सफल होती है।

प्रस्तुत पाठ में एक ऐसी ही फ़िल्म 'तीसरी कसम' और उसके शिल्पकार शैलेंद्र के व्यक्तित्व की समीक्षा की गई है। एक गीतकार के रूप में दशकों तक फ़िल्म क्षेत्र से जुड़े रहे कवि और गीतकार शैलेंद्र ने जब फणीश्वरनाथ रेणु की अमर कृति 'मारे गए गुलफाम' को 'तीसरी कसम' के नाम से सिनेमा के पर्दे पर उतारा तो वह मील का पत्थर सिद्ध हुई। आज भी उसकी गणना हिंदी की सफल और अमर फ़िल्मों में की जाती है। इस फ़िल्म ने न केवल अपने गीत, संगीत और कहानी के कारण प्रसिद्धि पाई, बल्कि इसमें उस समय के सबसे बड़े शोमैन राजकपूर और फ़िल्म की हीरोइन वहीदा रहमान ने अपने फ़िल्मी जीवन का सर्वोत्तम अभिनय करके सबको चमत्कृत कर दिया। एक सफल और यादगार फ़िल्म होने के अलावा 'तीसरी कसम' को इसलिए भी याद किया जाता है, क्योंकि इस फ़िल्म के निर्माण ने यह भी स्पष्ट कर दिया कि हिंदी फ़िल्म जगत में एक सार्थक और उद्देश्यपूर्ण फ़िल्म बनाना बहुत कठिन और जोखिम भरा काम है।

पाठ के प्रमुख पात्र और उनका परिचय

1. **शैलेंद्र**– • तीसरी कसम फ़िल्म के निर्माता • भावुक कवि एवं गीतकार • यश-धन लिप्सा से दूर • आदर्शवादी • 'स्वांतः सुखाय' रचना करने वाले।
2. **राजकपूर**–• फ़िल्म 'तीसरी कसम' के नायक • अपने समय के सुपर स्टार • एशिया के सबसे बड़े शोमैन • आँखों से बात करने वाले अभिनेता • शैलेंद्र के मित्र।
3. **वहीदा रहमान**– • प्रसिद्ध अभिनेत्री • 'तीसरी कसम' की नायिका • आँखों से बोलने वाली अभिनेत्री।
4. **शंकर-जयकिशन**– • प्रसिद्ध संगीतकार • फ़िल्म 'तीसरी कसम' के संगीतकार • इनके कारण फ़िल्म के सभी गीत लोकप्रिय हुए • शैलेंद्र को गीत के शब्द बदलने की सलाह देने वाले।
5. **फणीश्वरनाथ रेणु**– • 'तीसरी कसम' फ़िल्म की मूल कहानी के लेखक • अपने समय के प्रसिद्ध साहित्यकार • 'तीसरी कसम' के पटकथा लेखक।

पाठ का सारांश

तीसरी कसम के नायक–इस फ़िल्म के नायक अपने समय के शोमैन राजकपूर हैं, जो उस समय के महान अभिनेता और संवेदनशील कलाकार थे। जब राजकपूर की फ़िल्म 'संगम' को सफलता मिली, तो वह इससे बहुत उत्साहित थे। इस अवसर पर उन्होंने एक साथ चार फ़िल्मों के निर्माण की घोषणा की–'मेरा नाम जोकर', 'अजंता', 'मैं और मेरा दोस्त' तथा 'सत्यम् शिवम् सुंदरम्'। उस समय राजकपूर ने यह सोचा भी नहीं होगा कि उन्हें 'मेरा नाम जोकर' के एक भाग को बनाने में छह वर्ष लग जाएँगे। इन छह वर्षों के अंतराल में राजकपूर द्वारा अभिनीत कई फ़िल्में प्रदर्शित हुईं, जिनमें वर्ष 1966 में प्रदर्शित 'तीसरी कसम' भी शामिल है। इस फ़िल्म का निर्माण प्रसिद्ध कवि शैलेंद्र ने किया था। राजकपूर ने इस फ़िल्म में अपने जीवन का सर्वश्रेष्ठ अभिनय किया था।

'तीसरी कसम' एक श्रेष्ठ फ़िल्म–'तीसरी कसम' एक श्रेष्ठ फ़िल्म है। यह फ़िल्म मात्र एक फ़िल्म न होकर सैल्यूलाइड पर लिखी एक कविता थी, जो शैलेंद्र के जीवन की पहली और अंतिम फ़िल्म थी। इसे 'राष्ट्रपति स्वर्ण पदक' प्राप्त हुआ। इसके पश्चात् इसे बंगाल फ़िल्म जर्नलिस्ट एसोसिएशन का सर्वश्रेष्ठ फ़िल्म का पुरस्कार मिला। यही नहीं, इसे मास्को फ़िल्म फेस्टिवल में भी पुरस्कार मिला। इस फ़िल्म की कहानी गहरी संवेदनशीलता को पूरी शिद्दत के साथ प्रस्तुत करने में सक्षम थी। शैलेंद्र ने अपने प्रिय मित्र राजकपूर की भावनाओं को शब्द दिए थे और राजकपूर ने इस फ़िल्म में उत्कृष्ट अभिनय किया था।

शैलेंद्र और राजकपूर की मित्रता का प्रमाण–'तीसरी कसम' फ़िल्म शैलेंद्र और राजकपूर की सच्ची मित्रता का प्रमाण है। इस फ़िल्म में शैलेंद्र ने राजकपूर की भावनाओं को शब्द दिए हैं और राजकपूर ने किसी पारिश्रमिक की अपेक्षा किए बिना उतनी ही तन्मयता से काम किया है। कहा जाता है कि जब शैलेंद्र राजकपूर के पास इस फ़िल्म की कहानी लेकर गए थे, तो राजकपूर ने इस प्रस्ताव पर उत्साह दिखाते हुए कहा कि वह इस फ़िल्म में काम करेंगे, लेकिन शैलेंद्र यह सुनकर हैरान रह गए कि राजकपूर ने इस फ़िल्म में अभिनय करने के लिए अपना पूरा पारिश्रमिक अग्रिम (पहले, एडवांस में) ही माँग लिया। अपने मित्र की बात सुनकर शैलेंद्र का चेहरा उतर गया तो राजकपूर ने कहा कि वह पारिश्रमिक तो लेंगे, लेकिन उन्होंने अपना पारिश्रमिक मात्र 'एक रुपया' बताया। इस प्रकार राजकपूर ने इस फ़िल्म में केवल नाममात्र का पारिश्रमिक लिया और खुशी-खुशी काम करने को तैयार हो गए।

'तीसरी कसम' के निर्माण का उद्देश्य–इस फ़िल्म के निर्माण का उद्देश्य 'स्वांतः सुखाय' है। शैलेंद्र इस बात को जानते थे कि वह फ़िल्म निर्माता बनने योग्य नहीं हैं। राजकपूर ने उन्हें इस विषय में बता भी दिया था कि फ़िल्म निर्माण में अनेक प्रकार के खतरे हैं। शैलेंद्र पर इन बातों का कोई प्रभाव नहीं पड़ा। उन्हें न धन-संपत्ति की अभिलाषा थी और न सम्मान चाहिए था। वह तो केवल इस फ़िल्म को बनाकर आत्मसंतुष्टि प्राप्त करना चाहते थे। 'तीसरी कसम' के विषय में यह बता देना उल्लेखनीय होगा कि राजकपूर, वहीदा रहमान, शंकर-जयकिशन आदि प्रसिद्ध कलाकारों के होने के बाद भी इस फ़िल्म को खरीदने के लिए कोई वितरक तक नहीं मिला था, क्योंकि लाभ कमाने वाले वितरक इस फ़िल्म की संवेदना को समझ नहीं सके थे। यही कारण है कि न तो इस फ़िल्म का सही तरीके से प्रचार ही हुआ और न ही सही प्रकार से प्रदर्शन ही हो सका।

शैलेंद्र एक सच्चे कलाकार–शैलेंद्र को एक ऐसे व्यक्ति के रूप में जाना जाता है, जो बीस साल से फ़िल्म इंडस्ट्री में होने और वहाँ के काम के तौर-तरीके जानने के बाद भी अपनी इंसानियत को बचाकर रख सके थे। उनके द्वारा लिखे गए एक गीत की एक पंक्ति में मौजूद–'दसों दिशाओं' शब्द पर संगीतकार-जयकिशन ने आपत्ति प्रकट की कि लोग 'चार दिशाएँ' समझ सकते हैं, 'दस दिशाएँ' नहीं। शैलेंद्र ने जयकिशन की बात नहीं मानी। उनका कहना था कि कलाकार का कर्त्तव्य यह है कि वह दर्शकों की रुचि में सुधार करे।

शैलेंद्र ने अपनी लेखनी में कभी भी झूठे अभिजात्य को नहीं अपनाया। उनके गीत भावनामय होने के साथ-साथ सरल होते थे, जो आसानी से लोगों की

जुबान पर चढ़ जाते थे। यही कारण है कि वह 'मेरा जूता है जापानी' जैसा लोकप्रिय और सुरीला गीत लिख पाए, जो वर्षों तक लोगों की जुबान पर चढ़ा रहा।

'तीसरी कसम' शुद्ध साहित्यिक फ़िल्म–साहित्यिक कृतियों पर बनी अधिकतर फ़िल्मों में फ़िल्मकार व्यावसायिक सफलता की दृष्टि से अपनी इच्छानुसार परिवर्तन कर लेते हैं। इससे फ़िल्म मूल कृति और उसके उद्देश्य से भटक जाती है। इस फ़िल्म में ऐसा नहीं हुआ है। 'तीसरी कसम' फ़िल्म उन फ़िल्मों में से एक है, जिन्होंने साहित्य के साथ पूरा न्याय किया। शैलेंद्र ने इस फ़िल्म में गाड़ीवान हीरामन पर राजकपूर को हावी नहीं होने दिया, अपितु राजकपूर ही हीरामन बन गए। यही नहीं, उन्होंने प्रसिद्ध अभिनेत्री वहीदा रहमान को सस्ती छींट की साड़ी में लिपटी हुई हीराबाई बनाकर प्रस्तुत किया, जिसने हीरामन का मन मोह लिया था।

लोक-तत्त्व से युक्त फ़िल्म–भारतीय फ़िल्मों की सबसे बड़ी कमजोरी होती है–उनमें लोक-तत्त्व का अभाव। यह कहा जाता है कि भारतीय फ़िल्में ज़िंदगी से दूर होती हैं और यदि किसी फ़िल्म में जीवन के दुःखद पक्ष का चित्रण किया भी जाता है, तो उसे ग्लोरिफ़ाई किया जाता है अर्थात् उसे बढ़ा-चढ़ाकर प्रस्तुत किया जाता है ताकि दर्शकों का भावनात्मक शोषण किया जा सके। 'तीसरी कसम' की सबसे बड़ी और महत्त्वपूर्ण खूबी यह थी कि इसमें दिखाया गया दुख सहज और जीवन-सापेक्ष है। उसे बिलकुल भी ग्लोरिफ़ाई नहीं किया गया है।

शैलेंद्र की भावप्रवणता–'तीसरी कसम' फ़िल्म को शैलेंद्र ने अपनी भावप्रवणता का श्रेष्ठ तथ्य प्रदान किया है। वे गीतकार नहीं अपितु कवि थे और उन्होंने जीवन को एक कवि के रूप में ही जिया। यही कारण है कि सिनेमा की चकाचौंध भरी ज़िंदगी में भी वह यश, धन-लिप्सा आदि से कोसों दूर रहे। जो बात उनके जीवन में थी, वही उनके गीतों में भी। उनके गीतों में विद्यमान व्यथा व्यक्ति को पराजित नहीं करती, अपितु आगे बढ़ने का संदेश देती है। 'तीसरी कसम' में मुकेश का गाया हुआ यह गीत शैलेंद्र की कवित्त शक्ति और भावप्रवणता का उदाहरण है–

"सजनवा बैरी हो गए हमार, चिठिया हो तो हर कोई बाँचै भाग न बाँचै कोय...।"

'तीसरी कसम' में राजकपूर का अभिनय–'तीसरी कसम' के नायक (हीरो) राजकपूर हैं। अभिनय के दृष्टिकोण से यह फ़िल्म उनके जीवन की सबसे बेहतरीन फ़िल्म है। इस फ़िल्म में 'हीरामन' की भूमिका में उन्होंने मासूमियत के चरमोत्कर्ष को छू लिया था। यह भी कहा जाता है कि इस फ़िल्म में उनकी भूमिका 'जागते रहो' से भी अच्छी है। ऐसा लगता है जैसे राजकपूर 'तीसरी कसम' के 'हीरामन' के साथ एकाकार हो गए हैं, जो एक खालिस देहाती गाड़ीवान है और केवल दिल की ज़ुबान समझता है, दिमाग की नहीं। उसके लिए मोहब्बत के सिवा किसी दूसरी चीज़ का कोई अर्थ नहीं है।

उस समय तक राजकपूर एशिया के सबसे बड़े शोमैन के रूप में स्थापित हो चुके थे और उनका अपना व्यक्तित्व एक किंवदंती बन चुका था, लेकिन 'तीसरी कसम' में वह महिमामय व्यक्तित्व पूरी तरह 'हीरामन' की आत्मा में उतर गया है। वह 'हीराबाई' की फेनू-गिलासी बोली पर रीझता हुआ उसकी भोली सूरत पर न्योछावर हो जाता है। 'तीसरी कसम' की पटकथा मूल कहानी के लेखक फणीश्वरनाथ रेणु ने स्वयं तैयार की थी। यही कारण है कि कहानी का रेशा-रेशा, उसकी छोटी-से-छोटी बारीकी भी फ़िल्म में पूरी तरह से उतर आई है।

शब्दार्थ

अद्भुत = आश्चर्यजनक। **गहन** = गहरा। **कल्पना** = मन की उपज। **अंतराल** = के बाद। **अभिनीत** = अभिनय किया गया। **सर्वोत्कृष्ट** = सबसे अच्छा। **मार्मिक** = जो दिल या मर्म को छू जाए। **सैल्यूलाइड** = कैमरे की रील में उतार चित्र पर प्रस्तुत करना। **सार्थकता** = सफलता। **कलात्मकता** = कला से परिपूर्ण। **संवेदनशीलता** = भावुकता। **शिद्दत** = तीव्रता। **मौजूद** = उपस्थित। **अनन्य** = एकमात्र/परम। **तन्मयता** = तल्लीनता। **पारिश्रमिक** = मेहनताना। **बगैर** = बिना। **याराना मस्ती** = दोस्ताना अंदाज़। **हैसियत** = रंग-ढंग/सामर्थ्य। **आगाह** = सचेत। **भावुक** = भावनाओं में बहने वाला। **कामना** = इच्छा। **अभिलाषा** = इच्छा। **बमुश्किल** = बहुत कठिनाई से। **वितरक** = प्रसारित करने वाले लोग। **नामज़द** = विख्यात। **संवेदना** = सहानुभूति। **नावाकिफ़** = अनजान। **आदमियता** = इंसानियत। **मंतव्य** = इच्छा। **परिष्कार** = सुंदर एवं स्वच्छ बनाना। **अभिजात्य** = परिष्कृत। **भाव-प्रवण** = भावनाओं से भरा हुआ। **दुरूह** = कठिन। **उकड़ू** = घुटने मोड़कर पैर के तलवों के सहारे बैठना। **सूक्ष्मता** = बारीकी। **टप्पर-गाड़ी** = अर्धगोलाकार छप्परयुक्त बैलगाड़ी। **हुजूम** = भीड़। **अभिव्यक्ति** = प्रकट करना। **लोक-तत्त्व** = लोक संबंधी। **त्रासद** = दुखद। **ग्लोरीफ़ाई** = गुणगान करना, बढ़ा-चढ़ाकर प्रस्तुत करना। **बीभत्स** = घृणास्पद। **जीवन-सापेक्ष** = जीवन के प्रति। **चकाचौंध** = चमक-दमक। **धन-लिप्सा** = धन की अत्यधिक चाह। **अद्वितीय** = अनोखा। **दृष्टिकोण** = देखने, सोचने-समझने का पहलू। **हसीन** = खूबसूरत। **समीक्षक** = समीक्षा/परीक्षण करने वाला। **कला-मर्मज्ञ** = कला की परख करने वाला। **चर्मोत्कर्ष** = ऊँचाई के शिखर पर। **खालिस** = शुद्ध। **देहाती** = गाँव में रहने वाला। **भुच्च** = निरा/मूर्ख। **मुकाम** = पड़ाव/जगह। **किंवदंती** = कहावत। **पटकथा** = मुख्य कथा।

भाग-1

बहुविकल्पीय प्रश्न

गद्यांशों पर आधारित प्रश्न

निर्देश–*निम्नलिखित गद्यांशों को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के सही उत्तर विकल्प चुनकर लिखिए–*

(1) 'संगम' की अद्भुत सफलता ने राजकपूर में गहन आत्मविश्वास भर दिया और उसने एक साथ चार फ़िल्मों के निर्माण की घोषणा की–'मेरा नाम जोकर', 'अजंता' , 'मैं और मेरा दोस्त' और 'सत्यम् शिवम् सुंदरम्'। पर जब सन् 1965 में राजकपूर ने 'मेरा नाम जोकर' का निर्माण आरंभ किया तब संभवतः उसने भी यह कल्पना नहीं की होगी कि इस फ़िल्म का एक ही भाग बनाने में छह वर्षों का समय लग जाएगा। इन छह वर्षों के अंतराल में राजकपूर द्वारा अभिनीत कई फ़िल्में प्रदर्शित हुईं, जिनमें सन् 1966 में प्रदर्शित कवि शैलेंद्र की 'तीसरी कसम' भी शामिल है। यह वह फ़िल्म है जिसमें राजकपूर ने अपने जीवन की सर्वोत्कृष्ट भूमिका अदा की। यही नहीं, 'तीसरी कसम' वह फ़िल्म है जिसने हिंदी साहित्य की एक अत्यंत मार्मिक कृति को सैल्यूलाइड पर पूरी सार्थकता से उतारा। 'तीसरी कसम' फ़िल्म नहीं, सैल्यूलाइड पर लिखी कविता थी।

1. 'संगम' की सफलता ने राजकपूर के मन में क्या भर दिया–

(क) अहंकार (ख) आत्मविश्वास

(ग) उत्साह (घ) निराशा का भाव।

2. राजकपूर द्वारा एक साथ चार फ़िल्मों के निर्माण की घोषणा के कारणों पर विचार कीजिए और उचित विकल्प का चयन कीजिए–

(i) अधिक धन कमाने का लालच

(ii) 'संगम' की सफलता

(iii) आत्मविश्वास

(iv) अहंकार

(क) केवल (i) (ख) (i) और (ii)

(ग) (ii) और (iii) (घ) केवल (iv).

3. **निम्नलिखित कथन-कारण को पढ़कर उचित विकल्प का चयन कीजिए–**

कथन (A)–'संगम' की सफलता ने राजकपूर में गहन आत्मविश्वास भर दिया।

कारण (R)–उसने एक साथ चार फ़िल्मों के निर्माण की घोषणा कर दी।

(क) कथन (A) तथा कारण (R) दोनों गलत हैं।

(ख) कथन (A) गलत है, किंतु कारण (R) सही है।

(ग) कथन (A) सही है, किंतु कारण (R) उसकी गलत व्याख्या करता है।

(घ) कथन (A) तथा कारण (R) दोनों सही हैं और कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या करता है।

4. **'तीसरी कसम' फ़िल्म कब प्रदर्शित हुई–**

(क) सन् 1966 में (ख) सन् 1964 में

(ग) सन् 1967 में (घ) सन् 1968 में।

5. **'तीसरी कसम' फ़िल्म को क्या कहा जाता है–**

(क) गीतों का गुलदस्ता

(ख) मनोरंजन का खज़ाना

(ग) सैल्यूलाइड पर लिखी कविता

(घ) अनोखी कहानी।

उत्तर— 1. (ख) **2.** (ग) **3.** (घ) **4.** (क) **5.** (ग)।

(2) शैलेंद्र ने राजकपूर की भावनाओं को शब्द दिए हैं। राजकपूर ने अपने अनन्य सहयोगी की फ़िल्म में उतनी ही तन्मयता के साथ काम किया, किसी पारिश्रमिक की अपेक्षा किए बगैर। शैलेंद्र ने लिखा था कि वे राजकपूर के पास 'तीसरी कसम' की कहानी सुनाने पहुँचे तो कहानी सुनकर उन्होंने बड़े उत्साहपूर्वक काम करना स्वीकार कर लिया। पर तुरंत गंभीरतापूर्वक बोले–"मेरा पारिश्रमिक एडवांस देना होगा।" शैलेंद्र को ऐसी उम्मीद नहीं थी कि राजकपूर ज़िंदगी-भर की दोस्ती का ये बदला देंगे। शैलेंद्र का मुरझाया हुआ चेहरा देखकर राजकपूर ने मुसकराते हुए कहा, "निकालो एक रुपया, मेरा पारिश्रमिक! पूरा एडवांस।" शैलेंद्र राजकपूर की इस याराना मस्ती से परिचित तो थे, लेकिन एक निर्माता के रूप में बड़े व्यावसायिक सूझबूझ वाले भी चक्कर खा जाते हैं, फिर शैलेंद्र तो फ़िल्म-निर्माता के लिए सर्वथा अयोग्य थे।

1. **शैलेंद्र के अयोग्य फ़िल्म-निर्माता होने के कारणों पर विचार कीजिए और उचित विकल्प का चयन कीजिए–**

(i) ज्ञान का अभाव

(ii) कलात्मकता का अभाव

(iii) संवेदनशीलता

(iv) व्यावसायिक सूझ-बूझ की कमी

(क) केवल (i) (ख) (i) और (ii)

(ग) केवल (iv) (घ) (ii) और (iii).

2. **निम्नलिखित कथन-कारण को पढ़कर उचित विकल्प का चयन कीजिए–**

कथन (A)–शैलेंद्र ने राजकपूर की भावनाओं को शब्द दिए।

कारण (R)–राजकपूर ने अपना पारिश्रमिक एडवांस माँगा।

(क) कथन (A) तथा कारण (R) दोनों गलत हैं।

(ख) कथन (A) गलत है, किंतु कारण (R) सही है।

(ग) कथन (A) सही है, किंतु कारण (R) उसकी गलत व्याख्या करता है।

(घ) कथन (A) तथा कारण (R) दोनों सही हैं और कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या करता है।

3. **राजकपूर ने कितना पारिश्रमिक माँगा–**

(क) पचास हज़ार रुपये (ख) एक लाख रुपये

(ग) पाँच लाख रुपये (घ) केवल एक रुपया।

4. **राजकपूर द्वारा पारिश्रमिक एडवांस माँगने का शैलेंद्र पर क्या प्रभाव पड़ा–**

(क) उनका चेहरा खिल उठा (ख) उनका चेहरा मुरझा गया

(ग) वे क्रोधित हो गए (घ) वे उठकर चले गए।

5. **शैलेंद्र किस बात के लिए सर्वथा अयोग्य थे–**

(क) अभिनेता बनने के लिए

(ख) गायक बनने के लिए

(ग) फ़िल्म निर्माता बनने के लिए

(घ) कवि बनने के लिए।

उत्तर– 1. (ग) **2.** (ग) **3.** (घ) **4.** (ख) **5.** (ग)।

(3) ऐसा नहीं है कि शैलेंद्र बीस सालों तक फ़िल्म इंडस्ट्री में रहते हुए भी वहाँ के तौर-तरीकों से नावाकिफ़ थे, परंतु उनमें उलझकर वे अपनी आदमियत नहीं खो सके थे। 'श्री 420' का एक लोकप्रिय गीत है–'प्यार हुआ, इक़रार हुआ है, प्यार से फिर क्यूँ डरता है दिल।' इसके अंतरे की एक पंक्ति–'रातें दसों दिशाओं से कहेंगी अपनी कहानियाँ' पर संगीतकार जयकिशन ने आपत्ति की। उनका ख़याल था कि दर्शक 'चार दिशाएँ' तो समझ सकते हैं–'दस दिशाएँ' नहीं। लेकिन शैलेंद्र परिवर्तन के लिए तैयार नहीं हुए। उनका दृढ़ मंतव्य था कि दर्शकों की रुचि की आड़ में हमें उथलेपन को उन पर नहीं थोपना चाहिए। कलाकार का यह कर्त्तव्य भी है कि वह उपभोक्ता की रुचियों का परिष्कार करने का प्रयत्न करे। और उनका यकीन गलत नहीं था। यही नहीं, वे बहुत अच्छे गीत भी जो उन्होंने लिखे बेहद लोकप्रिय हुए। शैलेंद्र ने झूठे अभिजात्य को कभी नहीं अपनाया। उनके गीत भाव-प्रवण थे–दुरूह नहीं। 'मेरा जूता है जापानी, ये पतलून इंगलिस्तानी, सर पे लाल टोपी रूसी, फिर भी दिल है हिंदुस्तानी'–यह गीत शैलेंद्र ही लिख सकते थे। शांत नदी का प्रवाह और समुद्र की गहराई लिए हुए। यही विशेषता उनकी ज़िंदगी की थी और यही उन्होंने अपनी फ़िल्म के द्वारा भी साबित किया था।

1. **फ़िल्म इंडस्ट्री के तौर-तरीकों में उलझकर शैलेंद्र क्या नहीं खोना चाहते थे–**

(क) अपनी इज़्ज़त (ख) अपनी आदमियत

(ग) अपनी पहचान (घ) अपनी दौलत।

2. **शैलेंद्र द्वारा गीत में परिवर्तन न करने के कारणों पर विचार कीजिए और उचित विकल्प का चयन कीजिए–**

(i) दर्शकों पर उथलेपन को न थोपना

(ii) उपभोक्ता की रुचियों का परिष्कार करना

(iii) जिद्दीपन

(iv) स्वयं को विद्वान् समझना

(क) केवल (i) (ख) (i) और (ii)

(ग) (ii) और (iii) (घ) केवल (iv).

3. **निम्नलिखित कथन-कारण को पढ़कर उचित विकल्प का चयन कीजिए–**

कथन (A)–शैलेंद्र के गीत भाव-प्रवण थे, दुरूह नहीं।

कारण (R)–वे शांत नदी का प्रवाह और समुद्र की गहराई लिए हुए थे।

(क) कथन (A) तथा कारण (R) दोनों गलत हैं।

(ख) कथन (A) तथा कारण (R) दोनों सही हैं और कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या करता है।

(ग) कथन (A) गलत है, किंतु कारण (R) सही है।

(घ) कथन (A) सही है, किंतु कारण (R) उसकी गलत व्याख्या करता है।

4. **कलाकार का क्या कर्त्तव्य है–**

(क) वह उपभोक्ता की रुचियों का परिष्कार करे

(ख) वह उपभोक्ता की रुचियों की चिंता न करे

(ग) वह अधिक-से-अधिक धन कमाए

(घ) वह उपभोक्ता की रुचियों को बढ़ाए।

5. **शैलेंद्र के गीत कैसे थे–**

(क) बहुत दुरूह (ख) भाव-प्रवण

(ग) अरुचिकर (घ) अर्थहीन।

उत्तर– **1.** (ख) **2.** (ख) **3.** (ख) **4.** (क) **5.** (ख)।

(4) हमारी फ़िल्मों की सबसे बड़ी कमज़ोरी होती है, लोक-तत्त्व का अभाव। वे ज़िंदगी से दूर होती हैं। यदि त्रासद स्थितियों का चित्रांकन होता है तो उन्हें ग्लोरिफ़ाई किया जाता है। दुख का ऐसा वीभत्स रूप प्रस्तुत होता है जो दर्शकों का भावनात्मक शोषण कर सके और 'तीसरी कसम' की यह खास बात थी कि वह दुख को भी सहज स्थिति में, जीवन-सापेक्ष प्रस्तुत करती है।

मैंने शैलेंद्र को गीतकार नहीं, कवि कहा है। वे सिनेमा की चकाचौंध के बीच रहते हुए यश और धन-लिप्सा से कोसों दूर थे। जो बात उनकी ज़िंदगी में थी वही उनके गीतों में भी। उनके गीतों में सिर्फ़ करुणा नहीं, जूझने का संकेत भी था और वह प्रक्रिया भी मौजूद थी जिसके तहत अपनी मंज़िल तक पहुँचा जाता है। व्यथा आदमी को पराजित नहीं करती, उसे आगे बढ़ने का संदेश देती है।

1. **हमारी फ़िल्मों की सबसे बड़ी कमज़ोरी है–**

(क) कलात्मकता का अभाव

(ख) अच्छे संगीत का अभाव

(ग) लोक-तत्त्व का अभाव

(घ) हिंसा की अधिकता।

2. **भारतीय फ़िल्मों में किसे ग्लोरिफ़ाई किया जाता है–**

(क) शृंगारिक दृश्यों को

(ख) त्रासद स्थितियों के चित्रांकन को

(ग) अपराध और हिंसा को

(घ) भोग-विलास को।

3. **भारतीय फ़िल्मों की कमज़ोरी के कारणों पर विचार कीजिए और उचित विकल्प का चयन कीजिए–**

(i) लोक-तत्त्व का अभाव

(ii) ज़िंदगी से दूर होना

(iii) त्रासद स्थितियों को ग्लोरिफ़ाई करना

(iv) गीतों की अधिकता

(क) केवल (i) (ख) (i) और (ii)

(ग) (i), (ii) और (iii) (घ) केवल (iv).

4. **निम्नलिखित कथन-कारण को पढ़कर उचित विकल्प का चयन कीजिए–**

कथन (A)–शैलेंद्र गीतकार नहीं, कवि थे।

कारण (R)–वे यश और धन-लिप्सा से कोसों दूर थे।

(क) कथन (A) तथा कारण (R) दोनों गलत हैं।

(ख) कथन (A) सही है, किंतु कारण (R) उसकी गलत व्याख्या करता है।

(ग) कथन (A) गलत है, किंतु कारण (R) सही है।

(घ) कथन (A) तथा कारण (R) दोनों सही हैं और कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या करता है।

5. **व्यथा आदमी को करती है–**

(क) पराजित (ख) आगे बढ़ने के लिए प्रेरित

(ग) निराश (घ) हतोत्साहित।

उत्तर— **1.** (ग) **2.** (ख) **3.** (ग) **4.** (घ) **5.** (ख)।

(5) अभिनय के दृष्टिकोण से 'तीसरी कसम' राजकपूर की ज़िंदगी की सबसे हसीन फ़िल्म है। राजकपूर जिन्हें समीक्षक और कला-मर्मज्ञ आँखों से बात करने वाला कलाकार मानते हैं, 'तीसरी कसम' में मासूमियत के चर्मोत्कर्ष को छूते हैं। अभिनेता राजकपूर जितनी ताक़त के साथ 'तीसरी कसम' में मौजूद हैं, उतना 'जागते रहो' में भी नहीं। 'जागते रहो' में राजकपूर के अभिनय को बहुत सराहा गया था, लेकिन 'तीसरी कसम' वह फ़िल्म है जिसमें राजकपूर अभिनय नहीं करता। वह हीरामन के साथ एकाकार हो गया है। खालिस देहाती भुच्च गाड़ीवान जो सिर्फ़ दिल की ज़ुबान समझता है, दिमाग की नहीं। जिसके लिए मोहब्बत के सिवा किसी दूसरी चीज़ का कोई अर्थ नहीं। बहुत बड़ी बात यह है कि 'तीसरी कसम' राजकपूर के अभिनय-जीवन का वह मुकाम है, जब वह एशिया के सबसे बड़े शोमैन के रूप में स्थापित हो चुके थे। उनका अपना व्यक्तित्व एक किंवदंती बन चुका था। लेकिन 'तीसरी कसम' में यह महिमामय व्यक्तित्व पूरी तरह हीरामन की आत्मा में उतर गया है। वह कहीं हीरामन का अभिनय नहीं करता, अपितु खुद हीरामन में ढल गया है।

1. **अभिनय की दृष्टि से राजकपूर के जीवन की सर्वश्रेष्ठ फ़िल्म है–**

(क) अजंता (ख) संगम

(ग) तीसरी कसम (घ) जागते रहो।

2. **कला-मर्मज्ञ राजकपूर को कैसा कलाकार मानते हैं–**

(क) आडंबर करने वाला

(ख) आँखों से बात करने वाला

(ग) अच्छा अभिनय न करने वाला

(घ) कला से अधिक पैसे को महत्त्व देने वाला।

3. **'तीसरी कसम' में राजकपूर के अभिनय की उत्कृष्टता के कारणों पर विचार कीजिए और उचित विकल्प का चयन कीजिए–**

(i) आँखों से बात करने वाला कलाकार

(ii) पात्र में ढल जाना

(iii) संवेदनशीलता

(iv) बनावटीपन

(क) (i) और (ii) (ख) केवल (ii)

(ग) (iii) और (iv) (घ) (i), (ii) और (iii).

4. **निम्नलिखित कथन-कारण को पढ़कर उचित विकल्प का चयन कीजिए–**

कथन (A)–अभिनय की दृष्टि से 'तीसरी कसम' राजकपूर की सर्वोत्कृष्ट फ़िल्म है।

कारण (R)–इसमें वह भुच्च गाड़ीवान है, जो सिर्फ़ दिल की ज़ुबान समझता है।

(क) कथन (A) तथा कारण (R) दोनों गलत हैं।

(ख) कथन (A) गलत है, किंतु कारण (R) सही है।

(ग) कथन (A) सही है, किंतु कारण (R) उसकी गलत व्याख्या करता है।

(घ) कथन (A) तथा कारण (R) दोनों सही हैं और कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या करता है।

5. **राजकपूर का व्यक्तित्व बन चुका था–**

(क) एक पहेली (ख) एक किंवदंती

(ग) एक कथा (घ) एक कविता।

उत्तर– **1.** (ग) **2.** (ख) **3.** (घ) **4.** (ग) **5.** (ख)।

पाठ पर आधारित प्रश्न

निर्देश–निम्नलिखित प्रश्नों के सही उत्तर विकल्प चुनकर लिखिए–

1. **'तीसरी कसम के शिल्पकार शैलेंद्र' पाठ के लेखक हैं–**
(क) लीलाधर मंडलोई (ख) प्रह्लाद अग्रवाल
(ग) निदा फ़ाजली (घ) प्रेमचंद।

2. **प्रह्लाद अग्रवाल का जन्म किस प्रदेश में हुआ–**
(क) उत्तर प्रदेश में (ख) बिहार में
(ग) मध्य प्रदेश में (घ) राजस्थान में।

3. **किस फ़िल्म की सफलता ने राजकपूर को आत्मविश्वास से भर दिया–**
(क) मेरा नाम जोकर (ख) अजंता
(ग) संगम (घ) मैं और मेरा दोस्त।

4. **उत्कृष्ट होते हुए भी 'तीसरी कसम' फ़िल्म सिनेमाघरों में क्यों नहीं चली–** ***(CBSE 2023)***
(क) फ़िल्म की संवेदना का प्रचार न होने के कारण
(ख) अच्छे गीतों के अभाव के कारण
(ग) फ़िल्म में कमज़ोर अभिनय के कारण
(घ) फ़िल्म की कमज़ोर पटकथा के कारण।

5. **'तीसरी कसम' फ़िल्म निर्माण के पीछे शैलेंद्र का क्या उद्देश्य था–** ***(CBSE 2023)***
(क) आत्म-संतुष्टि के सुख की कामना
(ख) अपार संपत्ति के सुख की कामना
(ग) अपार यश के सुख की कामना
(घ) साहित्य संरक्षण के सुख की कामना।

6. **राजकपूर ने अपने जीवन का सर्वोत्कृष्ट अभिनय किस फ़िल्म में किया–**
(क) 'संगम' में (ख) 'मैं और मेरा दोस्त' में
(ग) 'मेरा नाम जोकर' में (घ) 'तीसरी कसम' में।

7. **'तीसरी कसम' फ़िल्म के निर्माता हैं–**
(क) राजकपूर (ख) शैलेंद्र
(ग) रामानंद सागर (घ) बी०आर० चोपड़ा।

8. **'तीसरी कसम' शैलेंद्र के जीवन की कौन-सी फ़िल्म थी–**
(क) पहली (ख) अंतिम
(ग) पहली और अंतिम (घ) तीसरी।

9. **'तीसरी कसम' के गीत किसने लिखे–**
(क) शैलेंद्र ने (ख) संतोषानंद ने
(ग) नीरज ने (घ) इनमें से कोई नहीं।

10. **राजकपूर के अनुसार फ़िल्म निर्माता के रूप में शैलेंद्र कैसे थे–**
(क) सर्वथा योग्य (ख) सर्वथा अयोग्य
(ग) असफल (घ) सफल।

11. **समीक्षक और कला-मर्मज्ञ राजकपूर को कैसा कलाकार मानते हैं–**
(क) अयोग्य (ख) भावनाशून्य
(ग) आँखों से बात करने वाला (घ) अहंकारी।

12. **'सजनवा बैरी हो गए हमार' गीत किसकी आवाज़ में है–**
(क) किशोर कुमार (ख) मुकेश
(ग) लता मंगेशकर (घ) उदित नारायण।

13. **'तीसरी कसम' फ़िल्म की हीरोइन कौन थीं–**
(क) वहीदा रहमान (ख) नर्गिस
(ग) मधुबाला (घ) मुमताज।

14. **कौन-सी फ़िल्म महान फ़िल्मों की श्रेणी में आती है–**
(क) तीसरी कसम (ख) सत्यम् शिवम् सुंदरम्
(ग) मेरा नाम जोकर (घ) अजंता।

15. **राजकपूर की बात सुनकर शैलेंद्र की क्या दशा हुई–**
(क) चेहरा खिल गया (ख) चेहरा हैरान हो गया
(ग) चेहरा मुरझा गया (घ) चेहरा फीका पड़ गया।

16. **'तीसरी कसम' किस रचना पर बनाई गई–**
(क) कायाकल्प (ख) जिंदगी की जीत में यकीन
(ग) देखा-अनदेखा (घ) मारे गए गुलफाम।

17. **'मारे गए गुलफाम' किसकी रचना है–**
(क) प्रेमचंद (ख) फणीश्वर नाथ रेणु
(ग) हरिशंकर परसाई (घ) भारतेंदु हरिश्चंद्र।

18. **निम्नलिखित में कौन-से वाक्य 'तीसरी कसम' से मेल खाते हैं–**
(i) यह शैलेंद्र की पहली और आखिरी फ़िल्म है।
(ii) यह फ़िल्म सैल्यूलाइड पर लिखी कविता थी।
(iii) ऐसी फ़िल्म सच्चा कवि-हृदय ही बना सकता था।
(iv) फ़िल्म के गीत नीरस हैं।
(क) (i) और (ii) (ख) केवल (iii)
(ग) (i), (ii) और (iii) (घ) केवल (iv).

19. **तीसरी कसम में वहीदा रहमान ने किसकी भूमिका निभाई–**
(क) सोना की (ख) हीराबाई की
(ग) चंपाबाई की (घ) जमनाबाई की।

20. **शैलेंद्र वास्तव में क्या थे–**
(क) साहित्यकार (ख) संगीतकार
(ग) गीतकार (घ) फ़िल्म निर्माता।

उत्तर– **1.** (ख) **2.** (ग) **3.** (ग) **4.** (क) **5.** (क) **6.** (घ) **7.** (ख) **8.** (ग) **9.** (क) **10.** (ख) **11.** (ग) **12.** (ख) **13.** (क) **14.** (क) **15.** (ग) **16.** (घ) **17.** (ख) **18.** (ग) **19.** (ख) **20.** (ग)।

भाग-2
(वर्णनात्मक प्रश्न)

निर्देश–निम्नलिखित प्रश्नों के संक्षिप्त उत्तर लिखिए–

प्रश्न 1 : 'तीसरी कसम' फ़िल्म को 'सैल्यूलाइड पर लिखी कविता' क्यों कहा गया?

उत्तर : फ़िल्म को सैल्यूलाइड रील पर बनाया जाता है और कविता को कागज़ पर लिखा जाता है। कविता अकसर फ़िल्म से अधिक भावपूर्ण और संवेदनशील होती है। 'तीसरी कसम' को बनाने वाले शैलेंद्र एक कवि थे। इस फ़िल्म को उन्होंने कविता जैसी सुकोमलता, संवेदनशीलता और संगीतात्मकता से भर दिया है; इसलिए इसे 'सैल्यूलाइड पर लिखी कविता' कहा गया है।

प्रश्न 2 : 'तीसरी कसम' फ़िल्म को खरीददार क्यों नहीं मिल रहे थे?

उत्तर : फ़िल्म का व्यवसाय करने वाले लोग हानि-लाभ का हिसाब लगाकर ही फ़िल्म को खरीदते हैं। वे दर्शकों की रुचि को ध्यान में रखते हैं। 'तीसरी कसम' में निहित संवेदना और करुणा को समझना सामान्य आदमी के वश की बात नहीं थी। अतः अपने समय के श्रेष्ठ कलाकारों से युक्त होते हुए भी 'तीसरी कसम' को खरीदार नहीं मिले।

प्रश्न 3 : शैलेंद्र के अनुसार कलाकार का कर्त्तव्य क्या है?

उत्तर : शैलेंद्र के अनुसार एक कलाकार को दर्शकों की रुचि का ध्यान तो रखना चाहिए, लेकिन रुचि की आड़ में उथलेपन को दर्शकों पर नहीं थोपना चाहिए। कलाकार का कर्त्तव्य है कि वह उपभोक्ता की रुचियों का परिष्कार करने का प्रयास करे।

प्रश्न 4 : फ़िल्मों में त्रासद स्थितियों का चित्रांकन ग्लोरिफ़ाई क्यों किया जाता है?

अथवा **हमारी फ़िल्मों में त्रासद स्थितियों का चित्रांकन ग्लोरीफ़ाई क्यों कर दिया जाता है? 'तीसरी कसम' के शिल्पकार शैलेंद्र के आधार पर उत्तर दीजिए।** *(CBSE 2018)*

उत्तर : आजकल की फ़िल्मों में गंभीर समस्याओं का विकराल रूप दिखाया जाता है। फ़िल्मों में त्रासद को इतना ग्लोरिफ़ाई कर दिया जाता है, जिससे कि दर्शक अत्यंत भावुक हो जाते हैं। उनका उद्देश्य केवल टिकट-विंडो पर ज़्यादा-से ज़्यादा टिकटें बिकवाना और अधिक-से-अधिक पैसा कमाना होता है। इसलिए दुःख को बहुत बढ़ा-चढ़ाकर दिखाते हैं, जो वास्तव में सच नहीं होता है। दर्शक फ़िल्म देखते समय उसे पूरा सत्य मान लेते हैं। इसलिए वे त्रासद स्थितियों को ग्लोरिफ़ाई करते हैं। ऐसी फ़िल्में अधिक धनराशि अर्जित कर लेती हैं।

प्रश्न 5 : 'शैलेंद्र ने राजकपूर की भावनाओं को शब्द दिए हैं' – इस कथन से आप क्या समझते हैं? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर : राजकपूर एक संवेदनशील और भावुक अभिनेता थे। उन्हें आँखों से बात करने वाला अभिनेता कहा जाता है। वे किसी ऐसी फ़िल्म में काम करना चाहते थे, जिसमें अपनी अभिनयकला, संवेदनशीलता और भावुकता को व्यक्त कर सकें। 'तीसरी कसम' एक ऐसी ही फ़िल्म थी। अतः जब राजकपूर को उस फ़िल्म में काम करने का अवसर मिला तो ऐसा लगा, मानो फ़िल्म के निर्माता शैलेंद्र ने राजकपूर की भावनाओं को शब्द दे दिए।

प्रश्न 6 : लेखक ने राजकपूर को एशिया का सबसे बड़ा शोमैन कहा है। शोमैन से आप क्या समझते हैं?

उत्तर : 'शो' में चार चाँद लगाने वाला ही वास्तव में शोमैन है। जैसे खेल में बेहतर प्रदर्शन करने वाला 'मैन ऑफ द मैच' होता है उसी प्रकार शोमैन का अर्थ है अपनी कला के प्रदर्शन से ज़्यादा-से-ज़्यादा जनसमुदाय इकट्ठा कर सके और लोगों का मनोरंजन भी कर सके। वह दर्शकों को अंत तक बाँधे रखता है तभी वह सफल होता है। राजकपूर भी महान कलाकार थे। जिस पात्र की भूमिका वे निभाते थे, उसी में समा जाते थे। इसलिए उनका अभिनय सजीव लगता था। उन्होंने कला को ऊँचाइयों तक पहुँचाया था। उनकी भावनाएँ उनके चेहरे पर परिलक्षित होती थीं।

प्रश्न 7 : फ़िल्म 'श्री 420' के गीत 'रातें दसों दिशाओं से कहेंगी अपनी कहानियाँ' पर संगीतकार जयकिशन ने आपत्ति क्यों की?

उत्तर : फ़िल्म 'श्री 420' के गीत 'रातें दसों दिशाओं से कहेंगी अपनी कहानियाँ' के 'दसों दिशाओं' शब्द पर जयकिशन को आपत्ति थी। उनका कहना था कि सामान्य लोग 'चार दिशाएँ' तो समझते हैं, 'दस दिशाएँ' नहीं समझते। अतः इस शब्द को बदल दिया जाए।

प्रश्न 8 : 'तीसरी कसम के शिल्पकार शैलेंद्र' पाठ से लिए गए कथन– ''ऐसा नहीं कि शैलेंद्र बीस सालों तक फ़िल्म इंडस्ट्री में रहते हुए भी वहाँ के तौर-तरीकों से नावाकिफ़ थे, परंतु उनमें उलझकर वे अपनी आदमियत नहीं खो सके थे।''–के संदर्भ में शैलेंद्र की विशेषताएँ लिखिए। *(CBSE 2023)*

उत्तर : उपर्युक्त कथन के आधार पर शैलेंद्र की निम्नलिखित विशेषताएँ हैं–

- उन्हें यश और धन की लिप्सा नहीं थी।
- वे दिखावे और बनावटीपन से दूर थे।
- वे दर्शकों की रुचि की आड़ में उन्हें तुच्छ विषय नहीं परोसना चाहते थे।
- उन्होंने झूठे अभिजात्य को कभी नहीं अपनाया।
- वे एक सच्चे कलाकार थे।
- संवेदना उनमें कूट-कूटकर भरी थी।

प्रश्न 9 : राजकपूर द्वारा फ़िल्म की असफलता के खतरों से आगाह करने पर भी शैलेंद्र ने यह फ़िल्म क्यों बनाई? *(CBSE 2015)*

उत्तर : राजकपूर जानते थे कि 'तीसरी कसम' में जो करुणा और संवेदना छिपी है, उसे फ़िल्म वितरक और सामान्य दर्शक नहीं समझ पाएँगे और यह फ़िल्म असफल हो जाएगी। उन्होंने इस खतरे से शैलेंद्र को आगाह कर दिया था। शैलेंद्र ने फिर भी यह फ़िल्म बनाई, क्योंकि वे एक आदर्शवादी कलाकार थे। उन्हें धन की लालसा नहीं थी। वे यह फ़िल्म आत्मसंतुष्टि के लिए बनाना चाहते थे, धन कमाने के लिए नहीं।

प्रश्न 10 : 'तीसरी कसम' में राजकपूर का महिमामय व्यक्तित्व किस तरह हीरामन की आत्मा में उतर गया है? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर : राजकपूर एशिया के सबसे बड़े शोमैन के रूप में स्थापित हो चुके थे। उनका व्यक्तित्व किंवदंती बन चुका था। लेकिन 'तीसरी कसम' में वह महिमामय व्यक्तित्व पूरी तरह हीरामन की आत्मा में उतर गया है। फ़िल्म का नायक 'हीरामन' खालिस देहाती गाड़ीवान है, जो मोहब्बत से भरी ज़ुबान को अच्छी तरह से समझता है। वह नौटंकी में काम करने वाली अदाकारा हीराबाई पर रीझ जाता है। राजकपूर ने इस चरित्र को इतनी अच्छी तरह से निभाया कि कहीं पर यह लगा ही नहीं कि यह गाड़ीवान हीरामन नहीं बल्कि राजकपूर हैं। राजकपूर ने स्वयं को इस चरित्र में इस तरह मिला दिया कि ऐसा लगा जैसे उनका अपना कोई अस्तित्व ही नहीं है।

प्रश्न 11 : लेखक ने ऐसा क्यों लिखा है कि 'तीसरी कसम' ने साहित्य-रचना के साथ शत-प्रतिशत न्याय किया है?

उत्तर : साहित्यिक रचनाओं पर बनी फ़िल्मों में अधिकांश फ़िल्म निर्माता अपनी इच्छा से परिवर्तन कर लेते हैं, ताकि फ़िल्म अच्छा लाभ कमा सके। 'तीसरी कसम' फ़िल्म फणीश्वरनाथ रेणु की पुस्तक 'मारे गए गुलफाम' पर आधारित है। शैलेंद्र ने पात्रों के व्यक्तित्व, प्रसंग, घटनाओं में कहीं कोई परिवर्तन नहीं किया है। कहानी में दी गई छोटी-छोटी बारीकियाँ, छोटी-छोटी बातें फ़िल्म में पूरी तरह दिखाई गई हैं। शैलेंद्र ने पैसा कमाने के लिए फ़िल्म नहीं बनाई थी। उनका उद्देश्य एक सुंदर फ़िल्म बनाना था। उन्होंने मूल कहानी को यथारूप में प्रस्तुत किया है। उनके योगदान तथा कड़ी मेहनत से एक सुंदर फ़िल्म 'तीसरी कसम' के रूप में हमारे समक्ष आई है। लेखक ने इसलिए कहा है कि 'तीसरी कसम' ने साहित्य-रचना के साथ शत-प्रतिशत का न्याय किया है।

प्रश्न 12 : शैलेंद्र के गीतों की क्या विशेषताएँ हैं? अपने शब्दों में लिखिए।

उत्तर : शैलेंद्र एक संवेदनशील सहृदय कवि थे। उन्होंने धनार्जन की लालसा से कभी गीत नहीं लिखे। उनके गीत भावनाओं से भरे होते थे। वे इतने सहज, सरल और बोधगम्य थे कि जनसामान्य को अपने दिल की आवाज़ लगते थे। वे उनके दिल की गहराई से निकले हुए होते थे और श्रोताओं के दिल में उतर जाते थे। उनके सभी गीत अत्यंत लोकप्रिय हुए। आज भी यदि शैलेंद्र के गीत सुनाई पड़ जाएँ तो एक अलग-सी टीस उठने लगती है।

प्रश्न 13 : फ़िल्म निर्माता के रूप में शैलेंद्र की विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।

उत्तर : अधिकतर फ़िल्म निर्माता धन कमाने के लिए फ़िल्मों का निर्माण करते हैं। इसके लिए वे उस मूल रचना में भी बदलाव कर देते हैं, जिस पर फ़िल्म बनाई जाती है। शैलेंद्र ने अधिक फ़िल्मों का निर्माण नहीं किया। पर यह आवश्यक नहीं कि जो अधिक फ़िल्में न बनाए उसकी फ़िल्म अच्छी नहीं होगी। फ़िल्म निर्माता के रूप में शैलेंद्र की पहली और आखिरी फ़िल्म 'तीसरी कसम' थी। उनकी फ़िल्म यश और धन कमाने की इच्छा से नहीं बनाई गई थी। शैलेंद्र ने साहित्यिक रचना को बखूबी ईमानदारी के साथ पर्दे पर चित्रित किया है। शैलेंद्र ने न केवल कहानी को पर्दे पर उकेरा, बल्कि हीरामन और हीराबाई की भावनाओं को शब्द भी दिए। उनकी संवेदनशीलता पूरी फ़िल्म में नज़र आती है। बेशक इस फ़िल्म को खरीदार नहीं मिले तो अलग बात है, पर शैलेंद्र की अपनी पहचान और फ़िल्म को अनेक पुरस्कार मिले और लोगों ने इसे सराहा भी। संक्षेप में कहा जाए तो एक फ़िल्म बनाकर भी उन्हें सफल निर्माता की संज्ञा दी जा सकती है।

प्रश्न 14 : शैलेंद्र के निजी जीवन की छाप उनकी फ़िल्म में झलकती है–कैसे? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर : शैलेंद्र फ़िल्म निर्माता नहीं, अपितु एक संवेदनशील कवि थे। किसी भी कविता पर उसके कवि के व्यक्तित्व की छाप होती है; अतः शैलेंद्र की फ़िल्म पर उनके व्यक्तित्व की गहरी छाप है। उन्होंने झूठे अभिजात्य को कभी नहीं अपनाया। उनके गीत भाव-प्रवण थे, दुरूह नहीं। उनका मानना था कि सच्चा कलाकार वही है जो वह उपभोक्ता की रुचियों का परिष्कार करने का प्रयत्न करे। उनके लिखे गए गीतों में बनावटीपन नाममात्र भी नहीं था। उनके गीतों में शांत नदी का प्रवाह भी था और गीतों का भाव समुद्र की तरह गहरा था। यही विशेषता उनकी ज़िंदगी की थी और यही उन्होंने अपनी फ़िल्म के द्वारा साबित किया।

प्रश्न 15 : लेखक के इस कथन से कि 'तीसरी कसम' फ़िल्म कोई सच्चा कवि-हृदय ही बना सकता था, आप कहाँ तक सहमत हैं? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर : लेखक के अनुसार 'तीसरी कसम' फ़िल्म कोई सच्चा कवि-हृदय ही बना सकता था। लेखक का यह कथन बिलकुल सही है क्योंकि यह फ़िल्म कविता के समान भावनाओं से पूर्ण है। शैलेंद्र एक संवेदनशील तथा भाव-प्रवण कवि थे और उनकी संवेदनशीलता की झलक इस फ़िल्म में स्पष्ट दिखाई देती है। यह संवेदनशीलता किसी साधारण फ़िल्म निर्माता में नहीं होती है। उन्होंने धन नहीं कमाया, बल्कि लोगों की प्रशंसा कमाई है। 'तीसरी कसम' जैसी फ़िल्म का निर्माण कोई सच्चा कवि-हृदय ही कर सकता है।

प्रश्न 16 : जब शैलेंद्र ने 'तीसरी कसम' फ़िल्म बनाने का निश्चय करते समय अभिनेता के रूप में राजकपूर को लेने की बात कही तो उन्होंने क्या उत्तर दिया? ***(CBSE 2015, 16)***

उत्तर : जब शैलेंद्र फ़िल्म बनाने का निश्चय करके राजकपूर के पास गए और उन्हें फ़िल्म की कहानी सुनाई, तो राजकपूर उसमें काम करने के लिए तुरंत तैयार हो गए और कहा कि मैं अपना पूरा पारिश्रमिक एडवांस लूँगा।

प्रश्न 17 : राजकपूर ने एक साथ चार फ़िल्मों के निर्माण की घोषणा की, इससे क्या पता चलता है? ***(CBSE 2015)***

उत्तर : 'संगम' की सफलता के बाद राजकपूर ने एक साथ चार फ़िल्मों के निर्माण की घोषणा की। ये फ़िल्में थीं–'मेरा नाम जोकर', 'अजंता', 'मैं और मेरा दोस्त' तथा 'सत्यम् शिवम् सुंदरम्'। इससे पता चलता है कि 'संगम' की सफलता ने उनमें गहन आत्मविश्वास भर दिया था।

प्रश्न 18 : वह तो एक आदर्शवादी भावुक कवि था, जिसे अपार संपत्ति और यश तक की इतनी कामना नहीं थी कि जितनी आत्म-संतुष्टि के सुख की अभिलाषा थी।–आशय स्पष्ट कीजिए।

उत्तर : इसका आशय यह है कि कवि धन या यश की कामना से रचना नहीं करता, बल्कि आत्मसंतुष्टि के लिए करता है। शैलेंद्र ने जब 'तीसरी कसम' फ़िल्म बनाई तो उन्हें पता था कि यह फ़िल्म सफल नहीं होगी, लेकिन फिर भी उन्होंने उसे बनाया। इसका कारण यह था कि उन्हें धन और यश की उतनी कामना नहीं थी, जितनी आत्म-संतुष्टि के सुख की, क्योंकि वे एक आदर्श भावुक कवि थे।

प्रश्न 19 : उनका यह दृढ़ मंतव्य था कि दर्शकों की रुचि की आड़ में हमें उथलेपन को उन पर नहीं थोपना चाहिए। कलाकार का यह कर्तव्य भी है कि वह उपभोक्ताओं की रुचियों का परिष्कार करने का प्रयत्न करे।–आशय स्पष्ट कीजिए।

उत्तर : इसके माध्यम से एक कलाकार का कर्तव्य बताया गया है। इसका आशय यह है कि एक कलाकार को दर्शकों की रुचियों का ध्यान तो रखना चाहिए, लेकिन उनकी आड़ में दर्शकों पर उथलेपन को नहीं थोपना चाहिए। एक सच्चे कलाकार का यह कर्तव्य है कि वह उपभोक्ता की रुचियों में सुधार करे और उन्हें अच्छा साहित्य प्रस्तुत करे।

प्रश्न 20 : व्यथा आदमी को पराजित नहीं करती, उसे आगे बढ़ने का संदेश देती है।–आशय स्पष्ट कीजिए। ***(CBSE SQP 2023-24)***

उत्तर : इसका आशय यह है कि शैलेंद्र के गीतों में करुणा और व्यथा है, लेकिन वे श्रोताओं को निराश या हताश नहीं करते, बल्कि जूझने और संघर्ष करने का संदेश देते हैं। इससे सिद्ध होता है कि व्यथा मनुष्य को पराजित नहीं करती, बल्कि आगे बढ़ने का संदेश देती है।

प्रश्न 21 : दरअसल इस फ़िल्म की संवेदना किसी दो से चार बनाने वाले की समझ से परे है।–आशय स्पष्ट कीजिए। ***(CBSE 2010, 11)***

उत्तर : 'तीसरी कसम' फ़िल्म का निर्माण कोई व्यापार या व्यवसाय नहीं था, न ही निर्माता को अधिक धन कमाने की आशा थी, इसमें फ़िल्म निर्माता ने भावनाओं का परिचय दिया था और इसलिए 'तीसरी कसम' फ़िल्म की संवेदना किसी आम आदमी के समझ से परे थी। अन्य फ़िल्मों की तरह जिनका उद्देश्य सिर्फ लाभ कमाना होता है की तरह इसमें सस्ते लोक-लुभावन मसालों को नहीं डाला गया था। अन्यथा यह फ़िल्म भी उन्हीं की भाँति हिट हो जाती जो फ़िल्में बनावटीपन में पैसा दे जाती हैं।

प्रश्न 22 : उनके गीत भाव-प्रवण थे, दुरूह नहीं।–आशय स्पष्ट कीजिए।

उत्तर : प्रस्तुत पंक्ति के द्वारा शैलेंद्र के गीतों की विशेषता बताई गई है। इसका आशय यह है कि शैलेंद्र के गीतों में भावों की प्रधानता थी। वे भाषा और अर्थ की दृष्टि से कठिन नहीं थे। उनकी भाषा सरल, सहज थी और उनमें बोधगम्य मानवीय संवेदना छिपी थी।

प्रश्न 23 : 'तीसरी कसम के शिल्पकार शैलेंद्र' पाठ का प्रतिपाद्य लिखिए। ***(CBSE 2016)***

उत्तर : इस पाठ का उद्देश्य 'तीसरी कसम' फ़िल्म की समीक्षा करना और इस फ़िल्म के निर्माता प्रसिद्ध गीतकार शैलेंद्र के व्यक्तित्व की विशेषताओं पर प्रकाश डालना है। 'तीसरी कसम' फणीश्वरनाथ रेणु की रचना 'मारे गए गुलफाम' पर बनाई गई फ़िल्म है। यह शैलेंद्र की पहली और अंतिम फ़िल्म है। इसमें कवि शैलेंद्र ने मूल कृति की संवेदनाओं को ज्यों-का-त्यों प्रस्तुत किया है। फ़िल्म में राजकपूर और वहीदा रहमान जैसे कलाकार हैं। शंकर-जयकिशन का संगीत है और इसके गीत स्वयं शैलेंद्र ने लिखे हैं। इतना सब कुछ होने पर भी इस फ़िल्म को खरीदार नहीं मिले। इसका कारण यह है कि इस फ़िल्म में छिपी संवेदना और करुणा को लाभ-हानि का हिसाब लगाने वाले वितरक नहीं समझ सके। वास्तव में यह फ़िल्म शैलेंद्र ने व्यवसाय के लिए नहीं, अपितु 'स्वांतः सुखाय' बनाई थी।

इस फ़िल्म पर शैलेंद्र के संवेदनशील और आदर्श व्यक्तित्व की गहरी छाप है। पाठ के माध्यम से लेखक ने एक सच्चे कलाकार के कर्तव्य को भी समझाया है। कलाकार का कर्तव्य दर्शकों की रुचियों का परिष्कार करना है, पैसा कमाना नहीं। पाठ में भारतीय फ़िल्मों की कमियों को उजागर करने के साथ-साथ फ़िल्म के नायक और अपने समय के शोमैन राजकपूर की अभिनय कला और व्यक्तित्व पर भी प्रकाश डाला गया है।

प्रश्न 24 : प्रस्तुत पाठ के आधार पर राजकपूर के चरित्र की विशेषताओं पर प्रकाश डालिए। ***(CBSE 2015)***

उत्तर : पाठ के आधार पर राजकपूर के चरित्र की निम्नलिखित विशेषताएँ हैं–

(i) राजकपूर को अपनी योग्यता और अभिनय कला पर पूर्ण विश्वास था। 'संगम' फ़िल्म की सफलता के बाद उन्होंने एक साथ चार फ़िल्में बनाने की घोषणा कर दी थी।

(ii) वे एक सच्चे मित्र थे। अपने मित्र शैलेंद्र की फ़िल्म 'तीसरी कसम' में उन्होंने किसी पारिश्रमिक की अपेक्षा किए बिना तन्मयता से काम किया।

(iii) राजकपूर को फ़िल्म-उद्योग की गहरी समझ थी। शैलेंद्र को उन्होंने 'तीसरी कसम' फ़िल्म की असफलता के खतरे से पहले ही आगाह कर दिया था।

(iv) वे एक महान अभिनेता थे। फ़िल्म में वे जो भी भूमिका निभाते थे, उसमें पूर्णरूप से खो जाते थे। 'तीसरी कसम' में उन्होंने हीरामन गाड़ीवान की भूमिका निभाई। यह उनके फ़िल्मी जीवन का सर्वश्रेष्ठ अभिनय था। वे आँखों से बात करने वाले कलाकार थे।

(v) राजकपूर अपने समय के महान कलाकार थे। वे एशिया के सबसे बड़े शोमैन के रूप में स्थापित हो चुके थे। उनका अपना व्यक्तित्व एक किंवदंती बन चुका था।

प्रश्न 25 : शैलेंद्र फ़िल्म-निर्माता बनने के सर्वथा अयोग्य थे, फिर भी 'तीसरी कसम' उनकी अद्भुत कृति थी।–कैसे? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर : शैलेंद्र फ़िल्म-निर्माता नहीं, बल्कि एक संवेदनशील कवि थे; इसलिए वे फ़िल्म-निर्माता के रूप में बहुत अधिक सफल नहीं रहे। यद्यपि वे बीस सालों से फ़िल्म इंडस्ट्री से जुड़े हुए थे और वहाँ के तौर-तरीकों से भली-भाँति परिचित थे। लेकिन उन्होंने इन तौर-तरीकों में उलझकर अपनी इंसानियत को नहीं खोया। उनका काम करने का तरीका अलग था। वह धन के लालच में फ़िल्म नहीं बनाते थे। संगीतकार जयकिशन ने गीत के शब्द 'दसों दिशाओं' पर यह आपत्ति की कि दर्शक चार दिशाएँ समझेगा, दस नहीं, परंतु शैलेंद्र ने गीत के शब्दों में परिवर्तन नहीं किया। उन्होंने कहा दर्शकों की रुचि की आड़ में उथलेपन को उन पर जबरदस्ती थोपना नहीं है। 'तीसरी कसम' के निर्माण के समय उन्हें राजकपूर द्वारा आगाह भी किया गया था कि यह फ़िल्म न बनाएँ मगर वे नहीं माने। उनका उद्देश्य एक भावनाओं से परिपूर्ण फ़िल्म को पर्दे पर उतारना था। 'तीसरी कसम' उन चंद फ़िल्मों में से एक है, जिन्होंने साहित्य के साथ शत-प्रतिशत न्याय किया है। शैलेंद्र ने राजकपूर को हीरामन पर हावी नहीं होने दिया, अपितु राजकपूर ही हीरामन बन गया। वहीदा रहमान को भी सस्ती छींट की साड़ी में हीराबाई बनाकर प्रस्तुत किया। वहीदा की बोलती आँखें, सादगी, सरलता और कोमल हृदय वाला गाड़ीवान इन सबने दर्शकों का मन मोह लिया।

हमारी आज की फ़िल्में लोकतत्त्व से दूर होती हैं, जिनमें त्रासद स्थितियों का ऐसा वीभत्स रूप दिखाया जाता है, जो कि दर्शकों की भावनाओं का शोषण करता है। दर्शक ऐसी घटनाओं को सच समझकर अपने दर्द और दुख को रोक नहीं पाते और भावुक हो जाते हैं। परंतु 'तीसरी कसम' में प्रस्तुत दुख सहज-स्वाभाविक था। 'तीसरी कसम' चाहे कितनी ही महान फ़िल्म थी मगर इसे प्रदर्शित करने के लिए वितरक नहीं मिले। इसका कोई खरीदार नहीं मिला। सच्चाई यह थी कि इस फ़िल्म की संवेदना लोभ की भाषा जानने वाले वितरकों की समझ से बाहर थी। इसलिए न तो फ़िल्म का प्रचार हुआ और न ही प्रदर्शन। फिर भी 'तीसरी कसम' शैलेंद्र की अद्भुत कृति थी।

प्रश्न 26 : लेखक ने शैलेंद्र को गीतकार नहीं, कवि कहा है।–क्यों? पाठ के आधार पर स्पष्ट कीजिए।

उत्तर : लेखक ने शैलेंद्र को गीतकार नहीं, कवि कहा है, क्योंकि गीतकार और कवि में अंतर होता है। फ़िल्मों के लिए गीत लिखने वाले गीतकार पैसे के लिए गीत लिखते हैं, जबकि एक कवि आत्मसंतुष्टि के लिए कविता लिखता है। शैलेंद्र सिनेमा की चकाचौंध के बीच रहते हुए भी यश और धन की लिप्सा से दूर रहे। एक गीतकार फ़िल्म के निर्माता और निर्देशक की इच्छानुसार गीत लिखता है, जबकि कवि की कविता में उसके मन की संवेदना और करुणा होती है। कविता पर कवि के व्यक्तित्व की गहरी छाप होती है। शैलेंद्र के गीतों पर उनके व्यक्तित्व की छाप दिखाई देती है। जो बात उनकी ज़िंदगी में थी, वही उनके गीतों में भी थी। उनके गीतों में केवल करुणा ही नहीं, जूझने का संकेत भी था और वह प्रक्रिया भी मौजूद थी जिसके द्वारा लक्ष्य तक पहुँचा जाता है।

शैलेंद्र के गीत भावना प्रधान थे। वे दुरूह नहीं, अपितु बहुत सहज, सरल और बोधगम्य थे। संवेदना और करुणा से परिपूर्ण होने के साथ-साथ वे संघर्ष का संदेश भी देते थे। 'तीसरी कसम' में मुकेश की आवाज़ में शैलेंद्र का यह गीत तो अद्वितीय बन गया–

'सजनवा बैरी हो गए हमार, चिठिया हो तो हर कोई बाँचे भाग न बाँचे कोय.....।'

ऐसी संवेदना, करुणा और भाव-प्रवणता एक सहृदय कवि ही व्यक्त कर सकता है। अतः लेखक का यह कथन उचित है कि शैलेंद्र गीतकार नहीं, कवि थे।

प्रश्न 27 : अभिनय की दृष्टि से 'तीसरी कसम' की समीक्षा कीजिए।

उत्तर : 'तीसरी कसम' में राजकपूर नायक (हीरो) और वहीदा रहमान नायिका (हीरोइन) है। राजकपूर ने हीरामन तथा वहीदा रहमान ने हीराबाई की भूमिका निभाई है। अभिनय के दृष्टिकोण से 'तीसरी कसम' राजकपूर की ज़िंदगी की सबसे हसीन फ़िल्म है। राजकपूर जिन्हें समीक्षक और कला-मर्मज्ञ आँखों से बात करने वाला कलाकार मानते हैं, 'तीसरी कसम' में मासूमियत के चर्मोत्कर्ष को छूते हैं। अभिनेता राजकपूर जितनी ताकत के साथ 'तीसरी कसम' में मौजूद हैं, उतना 'जागते रहो' में भी नहीं। 'जागते रहो' में राजकपूर के अभिनय को बहुत सराहा गया था, लेकिन 'तीसरी कसम' वह फ़िल्म है जिसमें राजकपूर अभिनय नहीं करता। वह हीरामन के साथ एकाकार हो गया है। खालिस देहाती भुच्च गाड़ीवान जो सिर्फ़ दिल की जुबान समझता है, दिमाग की नहीं। जिसके लिए मोहब्बत के सिवा किसी दूसरी चीज़ का कोई अर्थ नहीं। बहुत बड़ी बात यह है कि 'तीसरी कसम' राजकपूर के अभिनय-जीवन का वह मुकाम है, जब वह एशिया के सबसे बड़े शोमैन के रूप में स्थापित हो चुके थे। उनका अपना व्यक्तित्व एक किंवदंती बन चुका था। लेकिन 'तीसरी कसम' में वह महिमामय व्यक्तित्व पूरी तरह हीरामन की आत्मा में उतर गया है। वह कहीं हीरामन का अभिनय नहीं करता, अपितु खुद हीरामन में ढल गया है।

दूसरी ओर छींट की सस्ती साड़ी में लिपटी 'हीराबाई' ने वहीदा रहमान की प्रसिद्ध ऊँचाइयों को बहुत पीछे छोड़ दिया था। कजरी नदी के किनारे उकड़ू बैठा हीरामन जब गीत गाते हुए हीराबाई से पूछता है "मन समझती हैं न आप?" तब हीराबाई ज़ुबान से नहीं, आँखों से बोलती है। दुनिया-भर के शब्द उस भाषा को अभिव्यक्ति नहीं दे सकते। इस प्रकार अभिनय की दृष्टि से 'तीसरी कसम' एक श्रेष्ठ फ़िल्म है।